२१. ईसा की वंशावली

यद्यपि ईसाई मत की मान्यता के अनुसार ईसा मसीह पवित्र आत्मा के मरियम के द्वारा उत्पन्न पुत्र हैं, पर फिर भी मत्ती एवं लूका द्वारा लिखित जीवनियों-सुसमाचारों में ईसा की वंशावली दी गई है। जो गलतियों एवं अनुत्तरित प्रश्नों से भरपूर हैं। इसके अतिरिक्त १ इतिहास में भी ईसा के कुछ पूर्वजों की सूची दी गई है वह भी उपरोक्त दोनों सूचियों से नहीं मिलती–पाठकगण स्वयं देखें–

१ इतिहास	मत्ती	लूका
(परमेश्वर)		परमेश्वर
१. आदम		१. आदम
२. शेत		२. शेत
३. एनोश		३. एनोश
४. केनान		४. केनन
५. महललएल		५. महल्लेल
६. यारेद		६. यारद
७. हनोक		७. हनोक
८. मतूशेलह		८. मथुशलह
९. लामेक		९. लामेक
१०. नूह		१०. नूह
११. शेम		११. शेम
१२. अरपक्शद		१२. अर्पक्षत्
१३. कनान		१३. कनान
१४. शेलह		१४. शेलह
१५. एबर		१५. एलर
१६. पेलग		१६. पेलय

१ इतिहास	मत्ती	लूका
१७. रउ	.....	१७. रउ
१८. सरूग	.....	१८. सरूग
१९. नाहोर	.....	१९. नाहोर
२०. तेरह	.....	२०. तेरह
२१. अब्राहम	२१. अब्राहम	२१. अब्राहम
२२. इसहाक	२२. इसहाक	२२. इसहाक
२३. इस्राएल	२३. याकूब	२३. याकूब
२४. यहूदा	२४. यहूदा	२४. यहूदा
२५. पेरस	२५. पेरस	२५. पेरस
२६. हेस्रोन	२६. हेस्रोन	२६. हेस्रोन
२७. राम	२७. राम	२७. अरनी
२८. अम्मीनादाब	२८. अम्मीनादाब	२८. अदमीन
२९. नहशोन	२९. नहशोम	२९. अम्मीनादाब
३०. सल्मा	३०. सलमोन्	३०. नहशोम
३१. बोअज	३१. बोअज	३१. शेलह/सलमोन
३२. ओबेद	३२. ओबेद	३२. बोअज
३३. यिशय	३३. यिशय	३३. ओबेद
३४. दाउद	३४. दाउद	३४. यिशय
३५. सुलेमान	३५. सुलेमान	३५. दाउद
३६. रहोबआम	३६. रहोबआम	३६. नातान
३७. अबिय्याह	३७. अबिय्याह	३७. मत्ताता
३८. आसा	३८. आसा	३८. मिन्नाह
३९. यहोशाफट	३९. यहोशाफट	३९. मलेआह
४०. योराम	४०. योराम	४०. एलयाकीम
४१. अहज्याह	४१. अजर्याह	४१. योनान
४२. योआश	४२. योताम	४२. युसूफ
४३. अमस्याह	४३. आहाज	४३. यहूदा
४४. अजर्याह	४४. हिजकियाह	४४. शिमौन
४५. योताम	४५. मनश्शे	४५. लेवी
४६. आहाज	४६. आमोन	४६. मत्तात
४७. हिजकियाह	४७. योशियाह	४७. योराम
		४८. एलीएजर

१ इतिहास	मत्ती	लूका
४८. मनश्शे	४८. यकोन्याह	४९. यहोशू
४९. आमोन		५०. एर
५०. योशियाह		५१. इलमोदाम
५१. यहोयाकीम		५२. कोसाम
५२. यकोन्याह		५३. अद्दी
		५४. मलकी
		५५. नेरी
५३. पदायाह	४९. शालतिएल	५६. शालतिएल
५४. जरूब्बाबेल	५०. जरूब्बाबेल	५७. जरूब्बाबेल
५५. हनन्याह	५१. अबीहूद	५८. रेसा
५६. पलटयाह	५२. एलीयाकीम	५९. यूहन्ना
	५३. अजोर	६०. योदाह
	५४. सदोक	६१. योसेख
	५५. अखीम	६२. शिमी
	५६. एलीहूद	६३. मत्तित्याह
	५७. एलआजर	६४. मात
	५८. मत्तान	६५. नोगह
		६६. असल्याह
		६७. नहूम
		६८. आमोस
		६९. मत्तित्याह
		७०. यूसुफ
		७१. यन्ना
		७२. मलकी
		७३. लेवी

१. इतिहास १:   मत्ती १:२-१६   लूका ३:२३-२८

(क्रम १ से ११): १-४
(क्रम १२) : १७
(क्रम १३ से २१) : २४-२८
(क्रम २२) : ३४
(क्रम २३ से ३३) : २:१-१५
(क्रम ३४ से ५५) : ३:५-२१

	७४. मत्तात
५९. याकूब	७५. एली
६०. यूसूफ	७६. यूसुफ
६१. यीशु मसीह	७७. यीशु

इनके अतिरिक्त उत्पति की पुस्तक में भी ५:३ से ३८:३० तक विभिन्न पदों में, आदम से यहूदा के पुत्र पेरस तक की वंशावली दी गई है। यह वंशावली १ इतिहास ग्रन्थ के अनुरूप ही है, इसलिये उसे यहां नहीं दिया गया है। हालांकि इसी पुस्तक में उत्पति की पुस्तक के अनुसार आदम से याकूब/इस्राएल तक की वंशावली अन्यत्र (पृष्ठ . .....पर) दी गई है।

ऊपर हमने बाइबिल की तीन विभिन्न पुस्तकों के अनुसार मरियम के पति यूसुफ के पूर्वजों की तुलनात्मक सूची दी है। जिनमें दो पुस्तकें तो ईसा की जीवनी के रूप में सुसमाचार है। कोई इतिहास का बड़ा विद्वान या शोधकर्ता नहीं, वरन् एक सामान्य पाठक भी इन सूचियों पर विहंगम दृष्टि डालने पर अनेक शंकाएं करने को बाध्य हो जाएगा, जिनका उत्तर देना विद्वानों के लिए भी कठिन होगा।

१. यदि बाइबिल और ईसाई मान्यता के अनुसार ईसा परमेश्वर/पवित्र आत्मा के मरियम से उत्पन्न पुत्र थे और यूसुफ व यीशु का कोई भी जैविक सम्बन्ध न था तो फिर ये वंशावलियां, जो पूरी तरह से यूसुफ के परिवार की हैं, देने की क्या आवश्यकता थी। क्योंकि लिखा है–

"पर उनके मिलन के पूर्व वह पवित्र आत्मा से गर्भवती पाई गई।"

-मत्ती १: १८

वंशावली देना ही था तो मरियम की देते, जिससे कि यीशु का शारीरिक सम्बन्ध था। "मरियम का पवित्र आत्मा से गर्भवती होकर यीशु को जन्म देना एक चमत्कार कहा जाता है। पर परमेश्वर को चमत्कार करना ही था तो ईसा को भी आदम के ढंग से बनाकर लोगों को एकदम प्रभावित कर देना था। क्या परमेश्वर उस समय वह विधि भूल गया था? इस नई विधि, एक महिला की सहायता के लिये विवश होने, की आवश्यकता क्यों पड़ी? समय बीतने पर, अनुभव प्राप्त करने से मनुष्यों के ज्ञान में तो वृद्धि होती है, पर यहां परमेश्वर के ज्ञान में यह अवनति क्यों? जिससे दूसरे पर निर्भर होना पड़े।

२. आदम से युसूफ तक मत्ती के अनुसार ६० पीढ़ियां हुई, पर लूका के अनुसार ७६ पीढ़ियां हुई। एक दो नहीं, वरन् पूरे सोलह पीढ़ियों का अन्तर है। यह कोई कुछ कम गलती नहीं है।

३. कुछ पीढ़ियों के नामों के उच्चारण में थोड़ा बहुत अन्तर है। जैसे क्रम ४ केनान/केनन; ५ महललएल/महल्लेल; ६ यारेद/यारद; मतुशेलह/मथुशलह आदि। हालांकि हम इसे अभी इस समीक्षा में छोड़ सकते हैं। पर एक ही पुस्तक में, जो परमेश्वर के वचन के रूप में प्रचारित की जा रही हो, एक ही व्यक्ति के नाम का दो प्रकार से उच्चारण, उचित नहीं है।

४. सूचियों में कई एक पीढ़ियां एक सूची में है पर अन्य सूची में नहीं, जैसे–

(अ) *क्रम १२ पर अरपक्शद/अर्पक्षत् के पुत्र का नाम १ इतिहास में शेलह है। उत्पति ११:१२-१४ में भी यही स्थिति है पर लूका के अनुसार शेलह अर्पक्षत् का पुत्र नहीं वरन् पौत्र और पुत्र का नाम है कनान जो उत्पति व १ इतिहास के लेखकों को मालूम ही नहीं।*

(आ) *क्रम २५/२६ के हेस्रोन के पुत्र का नाम १ इतिहास व मत्ती के अनुसार राम है। पर लूका के अनुसार हेस्रोन के पुत्र का नाम राम नहीं वरन् अरनी था। होली बाइबिल (अंग्रेजी किंग जेम्स) आदि में लूका ३.३३ में भी राम ही हेस्रोन का पुत्र है।*

(इ) *१ इतिहास व मत्ती के अनुसार क्रम २७/२८ अम्मीनादाब हेस्रोन का पौत्र है जबकि लूका के अनुसार वह प्रपोत्र है। १ इतिहास व मत्ती के अनुसार वह राम का पुत्र है। जबकि लूका के अनुसार वह अरनी का पौत्र है। बीच में एक पीढ़ी अदमीन है जिससे १ इतिहास के लेखक व मत्ती अपरिचित है।*

(ई) *क्रम ३९ के योराम के बाद की तीन पीढ़ियों से मत्ती अपरिचित हैं। वहां अजर्याह, योराम का पुत्र है, पर १ इतिहास के अनुसार वह प्रप्रपौत्र (पौत्र का पौत्र) है।*

(उ) *क्रम ५१ का यकोन्याह, १ इतिहास के अनुसार योशियाह*

का पौत्र है जबकि मत्ती के अनुसार पुत्र है। मत्ती योशियाह के पुत्र यहोयाकिम से अपरिचित है।

(ऊ) ऐसी पीढ़ियों की गड़बड़ियां और भी हैं जो सूची से स्पष्ट हैं।

५. मत्ती १:६ के अनुसार दाउद (क्रम ३४) के पश्चात यूसुफ तक का वंश पुत्र सुलेमान (क्रम ३५) से चला। जबकि लूका के अनुसार आगे की वंशावली एक अन्य पुत्र नातान (क्रम ३६) से चली। जब यहीं से वंश वृक्ष की शाखाएं दो विभिन्न पुत्रों के कारण अलग-अलग बंट गई तो दोनों की सूचियों के अन्त में यूसुफ कैसे आ जाते हैं? यूसुफ के पूर्वज या तो सुलेमान होंगे या नातान–दोनों नहीं हो सकते। दोनों ही सूचियों में दाउद के पश्चात क्रम ४९-५०/५६-५७ के शालतिएल व जरूब्बाबेल व अन्त में यूसुफ के अतिरिक्त कोई नाम आपस में नहीं मिलते, और मिलना भी नहीं चाहिये कारण ये दो विभिन्न शाखाएं हैं।

६. मत्ती के अनुसार शालतिएल जरूब्बाबेल का पिता है। पर १ इतिहास के अनुसार जरूब्बाबेल का पिता शालतिएल नहीं, वरन् पदायाह है।

यद्यपि शालतिएल व पदायाह दोनों यकोन्याह के पुत्र थे, पर १ इतिहास के अनुसार जरूब्बाबेल शालतिएल का नहीं, वरन् पदायाह का पुत्र था।

"बन्दी यकोन्याह के ये पुत्र थे : शालतिएल, मत्कीराम, पदायाह, शेन अस्सर, यकमयाह, होशामा, और नदबयाह। पदायाह के ये दो पुत्र थे : जरूब्बाबेल और शिमई।"

१ इतिहास ३:१७-१९

७. मत्ती के अनुसार जरूब्बाबेल (क्रम ५०) के पश्चात यूसुफ तक ११ पीढ़ियां (दोनों सहित) हैं, पर लूका के अनुसार २० पीढ़ियां, कुल ९ पीढ़ियों का अन्तर। कारण स्पष्ट नहीं।

८. मत्ती के क्रम ५० के जरूब्बाबेल के पश्चात उसके पुत्र अबीहूद (क्रम ५१) का पुराने नियम में कहीं कोई सन्दर्भ नहीं[१]। इसी प्रकार लूका में जरूब्बाबेल के पुत्र रेसा (क्रम ५८)

---

१. कान्साइज बाइबिल डिक्शनरी, पृष्ठ ८

का भी कोई सन्दर्भ नहीं।
इसके विपरीत १ इतिहास में जरूब्बाबेल के पुत्रों के नाम कुछ और ही हैं।

''जरूब्बाबेल के ये दो पुत्र थे : मशूल्लाम और हनन्याह। इनकी बहिन का नाम शलोमीत था। इनके अतिरिक्त ये पांच पुत्र थे। हशूबाह, बेरेकयाह, हसदयाह और यूशब-हेसेद। ये हनन्याह के पुत्र थे : पलटयाह और यशायाह।

१ इतिहास ३:१९-२१

इस प्रकार १ इतिहास में जरूब्बाबेल के सात पुत्र होने पर भी मत्ती ''अबीहूद'' व लूका ''रेसा'' अलग ही नाम बताते हैं जिनका १ इतिहास में कोई उल्लेख नहीं। तथा मत्ती व लूका, १ इतिहास ग्रंथ से अपरिचित थे।

९. मत्ती के अनुसार यूसुफ के पिता याकूब थे, पर लूका के अनुसार यूसुफ के पिता याकूब नहीं वरन् एली थे।
हम पहले बता चुके हैं कि मत्ती ५८-६८ ई. के बीच, व लूका ६० ई. के आसपास लिखा गया। सन् ३३ ई. में ईसा की मृत्यु[१] के पश्चात भी उनकी माता व उनके भाई बहिन (मत्ती १३:५५/मरकुस ६:३) थे। उनसे यूसुफ के पिता के नाम की सही जानकारी प्राप्त की जा सकती थी। मत्ती व लूका न तो एकमत होकर, लिख पाये, न ही एक दूसरे से मिलकर या जांचकर सूचियां ठीक कर पाये।
बाइबिल में प्रायः भविष्यवाणियों का सन्दर्भ आता है। ईसा के पूर्व की और ईसा से बाद की कई एक भविष्यवाणियों का उल्लेख आता है : भविष्यवाणियां कहने वाले कुछ तो भूतकाल की सही बात बतायें। ईसा से मात्र दो पीढ़ी पहले के व्यक्ति के नाम पर एक मत नहीं और बात की जा रही है ईसा से ४००० वर्ष पहले की, जिसमें अनेकानेक गलतियां। सामान्य व्यक्ति के लेख में भी इस प्रकार की भूल व चूक दोनों की भरमार हो तो शायद लोग उसे स्वीकार न करें। फिर यह तो ईश्वरीय वचन कहा जाता है।इसमें इतनी गलतियां आश्चर्य

१. न्यू बाइबिल डिक्शनरी, पृष्ठ ५७३

का ही विषय होगा।

१०.मत्ती के अनुसार अब्राहम से यीशु मसीह तक बयालीस पीढ़ियां होना चाहिये थीं।

"इस प्रकार अब्राहम से दाउद तक चौदह पीढ़ी, दाउद से बेबीलोन निष्कासन तक चौदह पीढ़ी और बेबीलोन निष्कासन से मसीह तक चौदह पीढ़ी हुई।"

मत्ती १-१७

(अ) पर ऊपर दी गई सूची से स्पष्ट है कि अब्राहम से मसीह तक दोनों को शामिल करके भी केवल इकतालीस पीढ़ियां ही होती है न कि बयालीस।

(आ) जब ईसाई मान्यता के अनुसार मसीह यूसूफ के पुत्र ही नहीं थे, तो उन (यूसुफ) की पीढ़ी में कैसे शामिल किए जा सकते हैं?

(इ) दाउद-क्रम संख्या ३४ से बेबीलोन निष्कासन अर्थात् क्रम संख्या ४८ यकोन्याह तक उपरोक्त मत्ती १:१७ के अनुसार चौदह पीढ़ी होती हैं। पर १ इतिहास में दी गई क्रम संख्या ४० अहज्याह, ४१ योआश, ४२ अमस्याह, और ५० यहोयाकिम को छोड़ने पर।

"योराम का पुत्र अहज्याह था। अहज्याह का पुत्र योआश था। योआश का पुत्र अमस्याह था। अमस्याह का पुत्र अजरयाह था।"

....योशियाह के पुत्र ये थे—ज्येष्ठ पुत्र योहानान, दूसरा पुत्र यहोयाकीम, तीसरा पुत्र सिद्कियाह, चौथा पुत्र शल्लूम, यहोयाकीम का पुत्र यकोन्याह था।

१ इतिहास ३:११-१२, १५-१६

मत्ती की सूची में अहज्याह, योआश अमस्याह व यहोयाकिम नहीं हैं व इनके छोड़ने का कोई आधार भी स्पष्ट नहीं।

इस प्रकार यदि ईसा यूसुफ के पुत्र थे तो ही उपरोक्त वंशावलियों की आवश्यकता, अन्यथा बिलकुल अनावश्यक, सन्दर्भ से हठकर और वह भी गलतियों से परिपूर्ण। दाउद के पश्चात दो विभिन्न पुत्रों से वंश शाखा चलने पर भी आश्चर्य है कि कुछ नाम मिल जाते हैं

और दोनों वंशों के अन्त में यूसुफ आ ही जाते हैं। अब बाइबिल के विद्वान निश्चित करें कि यूसुफ किसके पुत्र एवं किस वंश में थे?

यद्यपि आजकल ईसा को परमेश्वर का पुत्र कहकर ही प्रचारित किया जाता है, पर अपने जीवन काल में तो वे यूसुफ के ही पुत्र के रूप में जाने जाते थे। आप स्वयं देखिए।

"क्या यह बढ़ई का पुत्र नहीं है? क्या इसकी माता का नाम मरियम और इसके भाइयों का नाम याकूब, यूसुफ, शिमौन और यहूदा नहीं है? क्या इसकी सब बहिनें हमारे बीच नहीं रहती?"

मत्ती १३:५५-५६

"क्या यह वही बढ़ई नहीं जो मरियम का पुत्र और याकूब, योसेस, यहूदा और शिमौन का भाई है? क्या इसकी बहिनें हमारे मध्य में नहीं रहती?"

मरकुस ६:३

"यीशु के माता-पिता प्रतिवर्ष फसह के पर्व पर यरूशलम की यात्रा करते थे।"...
जब वे उन दिनों को पूर्ण कर लौटे तब बालक यीशु यरूशलम में ही रह गया, उसके माता-पिता यह नहीं जानते थे।...यीशु को वहां देखकर उसके माता-पिता आश्चर्य करने लगे। उसकी माता ने कहा, 'पुत्र, तुमने हमारे साथ ऐसा व्यवहार क्यों किया? देखो, तुम्हारे पिता और मैं चिन्तित होकर तुम्हें ढूंढ रहे थे।'"

लूका २:४१,४३,४८

"यीशु इस समय लगभग तीस वर्ष के थे। ऐसा माना जाता था कि वह यूसुफ के पुत्र थे और यूसुफ एली का पुत्र था।"

लूका ३:२३

"वे बोले-'क्या यह यूसुफ का पुत्र यीशु नहीं है, जिसके माता-पिता को हम जानते हैं? तो यह कैसे कहता है कि मैं स्वर्ग से उतरा हूं?'"

यूहन्ना ६:४२

इस प्रकार चार सुसमाचार लेखकों में से मत्ती उन्हें "बढ़ई का

पुत्र'' तो लूका और यूहन्ना स्पष्ट रूप से ''यूसुफ का पुत्र'' लिखते हैं केवल मरकुस उन्हें ''बढ़ई'' कहते हैं। हालांकि ये अन्य व्यक्तियों के शब्द हैं, और उन्हें इनके द्वारा उद्धृत किया गया है, पर उस समय का जन सामान्य उन्हें ''यूसुफ के पुत्र'' के रूप में ही जानता और सम्बोधित करता था। ''परमेश्वर के पुत्र'' के रूप में कल्पना बाद की है। यही नहीं, लूका ने येरूशलम के उपरोक्त उद्धरण में मरियम और यूसुफ को माता-पिता के रूप में ही लिखा है। साथ ही मरियम द्वारा ईसा को उलाहना देते समय यूसुफ का सन्दर्भ ''तुम्हारे पिता'' के रूप में ही दिया गया है। इसके विपरीत जब जीवनीकार यूसुफ को ईसा से अलग बताना चाहते हैं तब उन्हें ''मरियम का पति'' (मत्ती १:१६) या मरियम का मंगेतर यूसुफ (मत्ती १:१९) लिखकर सन्दर्भित करते हैं।

एक और बात विचारणीय है कि मत्ती द्वारा उल्लेखित ईसा के भाइयों में एक नाम यूसुफ है, जबकि मरकुस द्वारा दिये गये नामों में इसके स्थान पर योसेस है। ये एक ही व्यक्ति हैं या अलग-अलग कुछ स्पष्ट नहीं।

बाइबिल के उपरोक्त उद्धरणों के अतिरिक्त अन्य सन्दर्भ भी ईसा को दाउद (यूसुफ के पूर्वज) का जैविक वंशज मानते हैं, जो वे थे। उदाहरण देखिये–

''इसलिये एक नबी होने के कारण, यह जानते हुए कि परमेश्वर ने उनसे शपथ खाई है, कि जैविक रूप से, शरीर के एक फल, ईसा को उनके सिंहासन पर बिठाएगा।''

(किंग जेम्स) होली बाइबिल-कार्य : २:३०

क्योंकि यह वाक्य निश्चित रूप से परेशानी में डालने वाला था अतः इसे निम्नानुसार परिवर्तित किया गया।

''लेकिन वह एक नबी था और जानता था कि परमेश्वर ने उन्हें शपथपूर्वक वचन दिया है कि वह उसके वंशजों में से एक को उसके सिंहासन पर बिठाएगा।''

नया अन्तर्राष्ट्रीय संस्कार-दि बाइबिल-कार्य : २:३०

उपरोक्त उद्धरणों में, उनसे, वह या नबी के रूप में दाउद का सन्दर्भ है।

बाइबिल के उपरोक्त वचन को हिन्दी बाइबिल में निम्नानुसार

प्रस्तुत किया गया है।

"दाउद एक नबी थे, इस कारण वह जानते थे कि परमेश्वर ने उनसे शपथ खाई है, 'मैं तेरे वंश में से एक व्यक्ति को तेरे सिंहासन पर बैठाऊंगा।'"

प्रेरितों के कार्य २:३०

ईसा के दाउद के शारीरिक वंशज होने के सम्बन्ध में एक और उदाहरण देखिये–

"उसके पुत्र, हमारे प्रभु ईसा मसीह के सम्बन्ध में, जो शारीरिक रूप से दाउद के बीज से बनाया गया था और पवित्रात्मा की आत्मा के अनुसार, मृतकों में से जी उठने के कारण, परमेश्वर का पुत्र घोषित किया गया।"

(किंगजेम्स) होली बाइबिल-रोमन्स १:३-४

हिन्दी बाइबिल में भी लगभग यही स्थिति है–

"यीशु शरीर की दृष्टि से दाउद के वंश में उत्पन्न हुए पर पवित्र आत्मा की दृष्टि से और मृतकों में से जी उठने के कारण, सामर्थ्य के साथ परमेश्वर के पुत्र प्रमाणित हुए।"

रोमियो १:३-४

दोनों ही संस्करणों में ईसा को दाउद का वंशज-शारीरिक रूप से स्पष्ट रूप से स्वीकार किया गया है, पर जहां होली बाइबिल में उन्हें "परमेश्वर का पुत्र घोषित" करने की बात स्पष्ट रूप से कही गई है वहां हिन्दी बाइबिल में वे "परमेश्वर के पुत्र प्रमाणित" हो गये। और वह भी "मृतकों में से जी उठने के कारण" जो स्वयं अपने आप में संदिग्ध है।

क्योंकि उपरोक्त दोनों ही उद्धरणों में ईसा को दाउद का शारीरिक वंशज मानने से "परमेश्वर के पुत्र" का सिद्धान्त समाप्त हो जाता है, नये अन्तर्राष्ट्रीय संस्करण में फिर परिवर्तन किया गया।

"उसके पुत्र के सम्बन्ध में, जो उसके मानवीय स्वभाव के अनुसार दाउद का वंशज था और जो पवित्रता की आत्मा के द्वारा परमात्मा के पुत्र होने की शक्तियों से सम्पन्न घोषित किया गया था।"

नया अन्तर्राष्ट्रीय संस्करण-दि बाइबिल-रोमन्स १:३-४

ईसा के ''शारीरिक रूप से दाउद के बीज/वंशज'' होने की बात गायब कर दी गई और उन्हें ''मानवीय स्वभाव से दाउद का वंशज'' बना दिया गया। स्वभाव के अनुसार तो कोई किसी का भी और कितनों ही का वंशज बनाया जा सकता है, पर शारीरिक रूप से तो वंशज एक ही का होता है और वंशज के स्वभाव में पूर्वज के स्वभाव से भिन्नता भी हो सकती है। ''दाउद के शारीरिक वंशज'' को ''स्वभाव से वंशज'' बनाने की आवश्यकता इसलिए हुई कि ईसा को परमेश्वर का पुत्र बताया जा सके। दि बाइबिल में स्थिति और सामान्य बनाई गई कि वे परमेश्वर के पुत्र होने की शक्तियों से सम्पन्न थे।

यहां यह भी ध्यान देने योग्य बात है कि प्रेरितों के कार्य और रोमियों दोनों ही चारों सुसमाचारों के बाद की पुस्तकें हैं और वहां स्थिति को ज्यादा स्पष्ट और सामान्य बनाने का प्रयास किया गया है।

होली बाइबिल में ईसा को दाउद के सिंहासन पर बिठाने की परमेश्वर की शपथ का सन्दर्भ दिया गया है, पर ईसा तो दाउद के सिंहासन पर बैठकर शासक नहीं बन सके। ऐसे में कहा जा सकता है कि ईसा धातुओं के सिंहासन पर नहीं बैठे, पर वे हृदयों पर शासन करते हैं, वे हृदय सम्राट हैं। पर दाउद तो राजनीतिक राजा थे। ईसा को भी इसी प्रकार राजनीतिक राजा बनाया जाना चाहिए, पर वे नहीं बनाए जा सके। इसी कारण दि बाइबिल व हिन्दी बाइबिल में ईसा के स्थान पर ''वंशजों'' या ''वंश में से एक'' को सिंहासन पर बिठाने की बात कही गई। इस आशा में कि ईसा न बैठ सके तो कोई बात नहीं, शायद उनके वंशजों में से कोई बैठ जाए। पर पिछले दो हजार वर्षों में यह न हो सका और भविष्य में भी सम्भव नहीं।

इस प्रकार ईसा मसीह दाउद के वंशज, और यूसुफ के पुत्र थे और उन्हें परमेश्वर का पुत्र प्रचारित किया गया।

❑❑❑